SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

भाग - 5

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 1921 - असहयोग आंदोलन मे किन समूहो ने अपना योगदान दिया ?

Q. असहयोग आंदोलन किस प्रकार एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन कहा जा सकता है ?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अवध मे किसान किस प्रकार कांग्रेस से जुडे ?

Q. 1) अल्लूरी सीतारामराजू
2) 1859 इनलैण्ड इमिग्रेशन एक्ट

Q. असहयोग आदोंलन धीमा क्यों हुआ ?

Q. असहयोग आदोंलन क्यों रोका गया ?

6 जनवरी 1921 को संयुक्त प्रांत में रायबरेली के पास पुलिस ने किसानों पर गोली चलाई। जवाहरलाल नेहरू घटनास्थल का दौरा करना चाहते थे। लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक दिया। गुस्से में नेहरू ने अपने आसपास खड़े किसानों को ही संबोधित किया। बाद में इस सभा के बारे में उन्होंने बताया था–

'उनका आचरण खतरे के सामने होते हुए भी बहादुर, शांत और निश्चित लोगों जैसे था। पता नहीं उन्हें क्या महसूस हो रहा था लेकिन मुझे पता है कि मैं क्या महसूस कर रहा था। एक पल के लिए मेरा भी खून खौल उठा था, अहिंसा तो न जाने कहाँ छूट गई थी - लेकिन सिर्फ़ एक पल के लिए। जिसे ईश्वर की कृपा से हमें विजयद्वार पर ले जाने के लिए भेजा गया है उस महान नेता के विचार मुझे याद आ गए और मैंने देखा कि मेरे आसपास बैठे और खड़े किसान मेरे से कम उत्तेजित, मेरे से ज़्यादा शांत थे। मेरी दुर्बलता का यह क्षण बीत गया। मैंने पूरी विनम्रता के साथ अहिंसा पर उनसे बात की - यह सबक उनसे ज़्यादा मुझे सीखना था - उन्होंने मेरी बात समझी और शांति से चले गए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1922 → असहयोग ×

↓

चौरी चौरा



missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सविनय अवज्ञा की ओर



- असहयोग आंदोलन पूरे देश में व्यापक जनाधार वाला आंदोलन बन गया था। शहरों एवं देहात सभी जगह फैले इस आंदोलन में सभी वर्गों के लोगों ने भाग लिया था।
- असहयोग आंदोलन ने जब हिंसक रूप धारण कर लिया तो फरवरी 1922 में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस लेने का फैसला कर लिया।
- उनको लगता था सत्याग्रहियों को व्यापक प्रशिक्षण की ज़रूरत है।
- कांग्रेस के कुछ नेता इस तरह के जनसंघर्षों से थक चुके थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



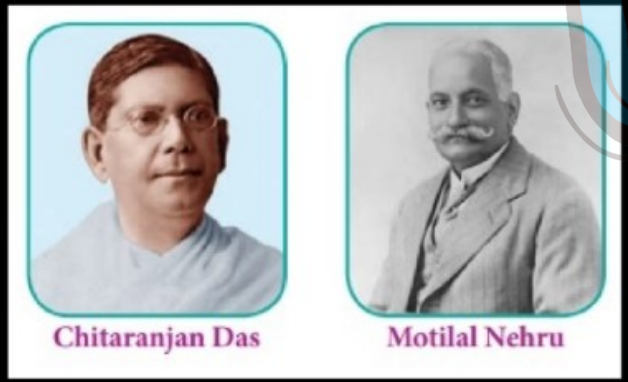

- वे 1919 के गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के तहत गठित की गई प्रांतीय परिषदों के चुनाव में हिस्सा लेना चाहते थे।
- परिषदों में रहते हुए वे –
  (i) ब्रिटिश नीतियों का विरोध करना चाहते थे।
  (ii) सुधारों की वकालत करना चाहते थे।
  (iii) तथा यह दिखाना चाहते थे कि ये परिषदें लोकतांत्रिक संस्था नहीं हैं।
- चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने परिषद् राजनीति में वापस लौटने के लिए कांग्रेस के भीतर ही स्वराज पार्टी का गठन कर डाला।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे युवा नेता ज़्यादा उग्र-जनांदोलन के द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता के लिए दबाव बनाए हुए थे।
- इस माहौल में दो ऐसे तत्व थे जिन्होंने 1920-30 के दशक के आखिरी वर्षों में भारतीय राजनीति की रूपरेखा बदल दी।
  (i) विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का असर तथा
  (ii) साइमन कमीशन का गठन

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

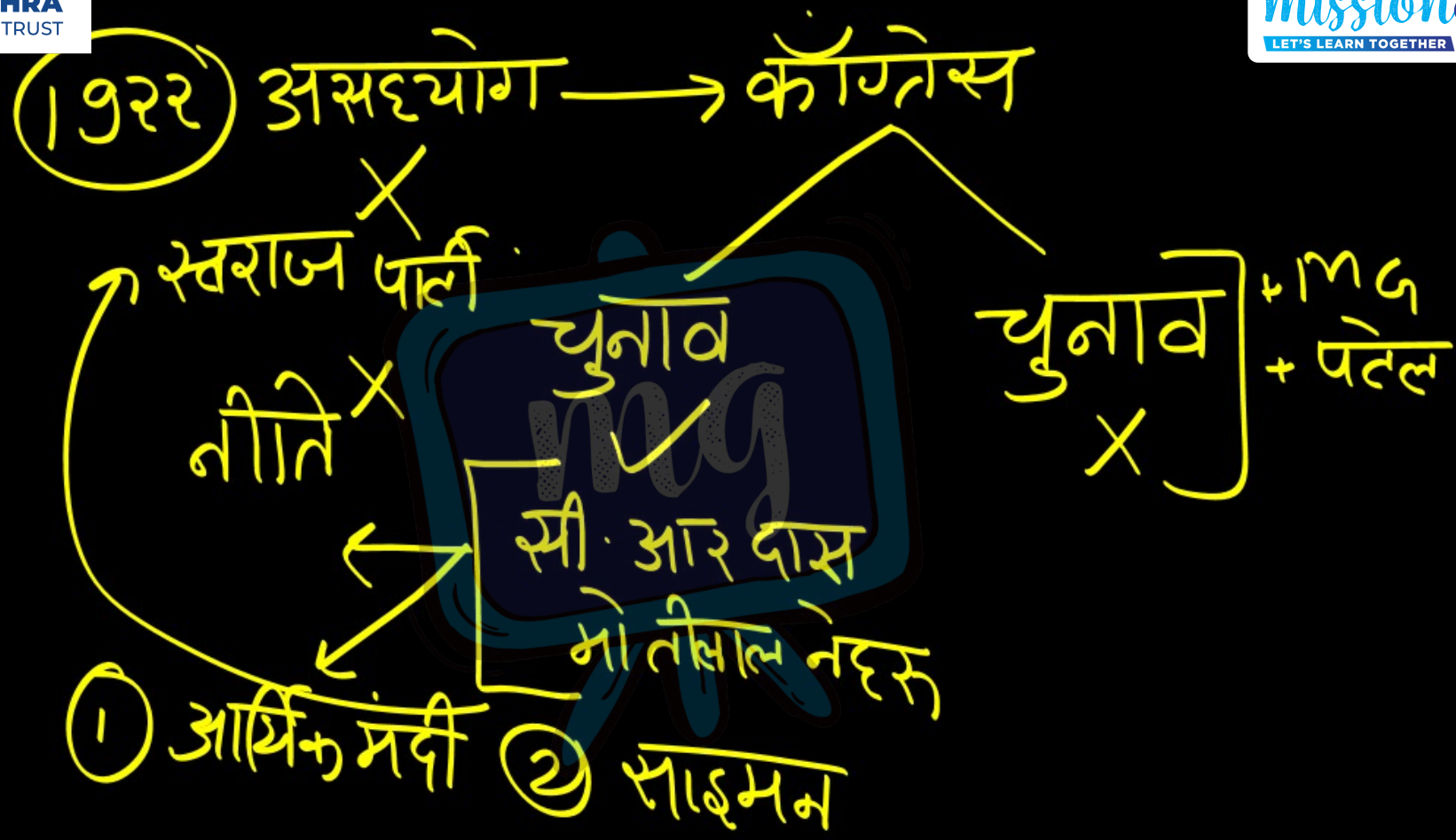

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



(i) विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का असर :-

- 1926 से कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने लगी थीं और 1930 के बाद तो पूरी तरह धराशायी हो गई।
- कृषि उत्पादों की माँग गिरने से तथा निर्यात कम होने लगा तो किसानों को अपनी उपज बेचना और लगान चुकाना भी भारी पड़ने लगा।
- 1930 तक ग्रामीण इलाके भारी उथल-पुथल से गुजरने लगे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जॉन साइमन



(ii) साइमन कमीशन का गठन :-

- ब्रिटेन की नयी टोरी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक वैधानिक आयोग का गठन कर दिया।
- राष्ट्रवादी आंदोलन के जवाब में गठित किए गए इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन कर उसके बारे में सुझाव देने थे।
- इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था सारे अंग्रेज़ थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1927

साइमन कमीशन का विरोध :-

- 1928 में जब साइमन कमीशन भारत पहुँचा तो उसका स्वागत 'साइमन कमीशन वापस जाओ' (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों से किया गया।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग, सभी पार्टियों ने प्रदर्शनों में हिस्सा लिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पंजाब → प्रदर्शन → लाला लाजपत

- साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय ने लाहौर में एक आंदोलन का नेतृत्व किया। जिससे अंग्रेज सरकार हिल गयी। अंग्रेजों ने विरोध करने वालों पर लाठियाँ बरसाई जिसमें 17 नवम्बर 1928 को लाला लाजपत राय शहीद हो गये।
- इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड इरविन ने अक्तूबर 1929 में भारत के लिए 'डोमीनियन स्टेटस' का गोलमोल सा ऐलान कर दिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यद्यपि उन्होंने इस बारे में कोई समय सीमा भी नहीं बताई। बस इतना कहा कि भावी संविधान के बारे में चर्चा करने के लिए गोलमेज़ सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।
- इस प्रस्ताव से कांग्रेस के नेता संतुष्ट नहीं थे।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में कांग्रेस के तेज़-तर्रार खेमे के नेता आक्रामक तेवर अपनाने लगे थे।
- मध्यमार्गी नेता तथा उदारवादी नेता ब्रिटिश डोमीनियन के भीतर ही संवैधानिक व्यवस्था के पक्ष में थे। लेकिन इस खेमे का प्रभाव घटता जा रहा था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

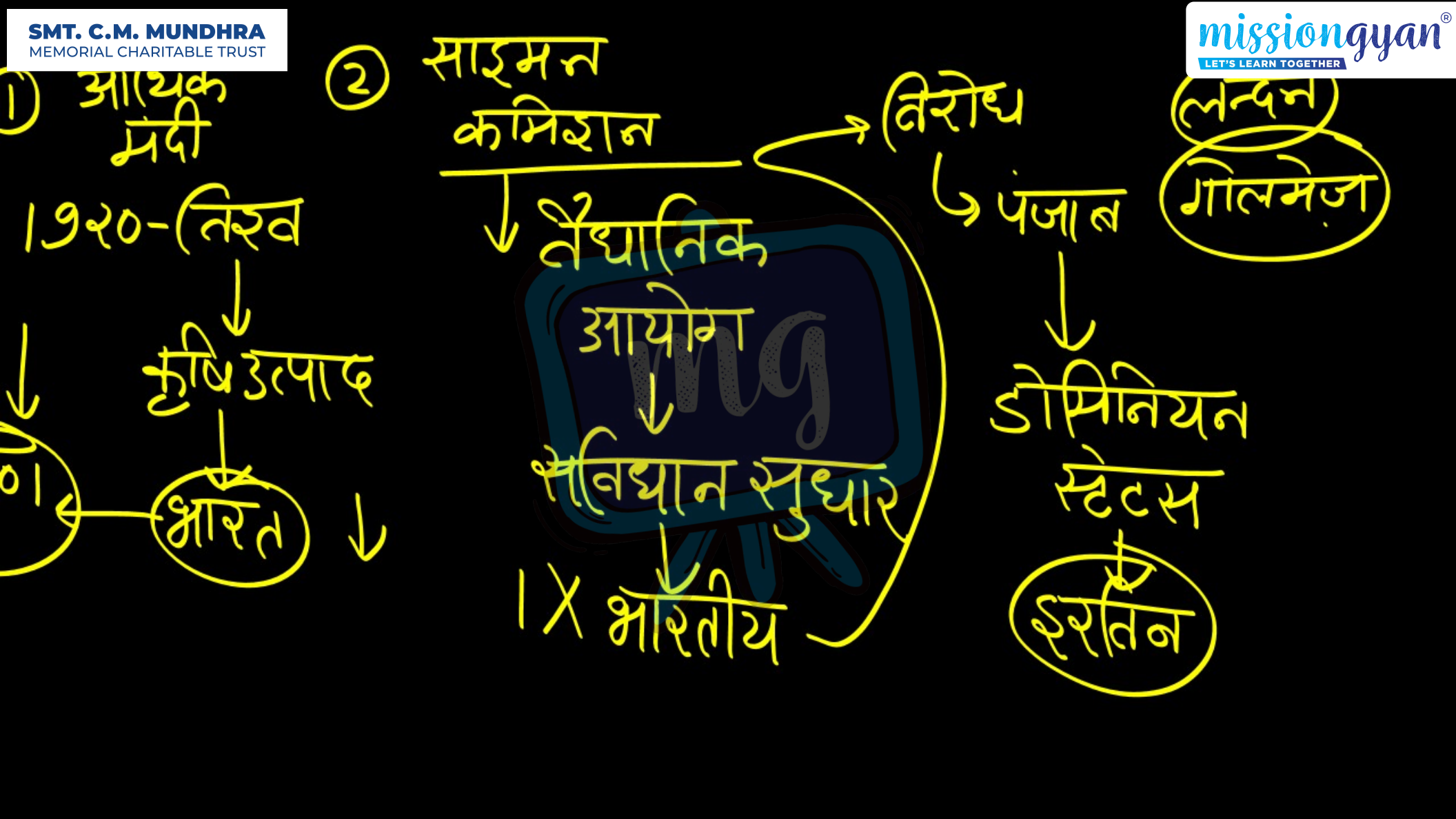

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1928 → सर्वदलीय सुधार

तिरोध

नेहरू समिति

रिपोर्ट

अस्वीकृत

पूर्ण स्वराज :-

- दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की माँग को औपचारिक रूप से मान लिया गया।
- तय किया गया कि 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा और उस दिन लोग पूर्ण स्वराज के लिए संघर्ष की शपथ लेंगे।
- यद्यपि इस उत्सव की ओर बहुत कम ही लोगों ने ध्यान दिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

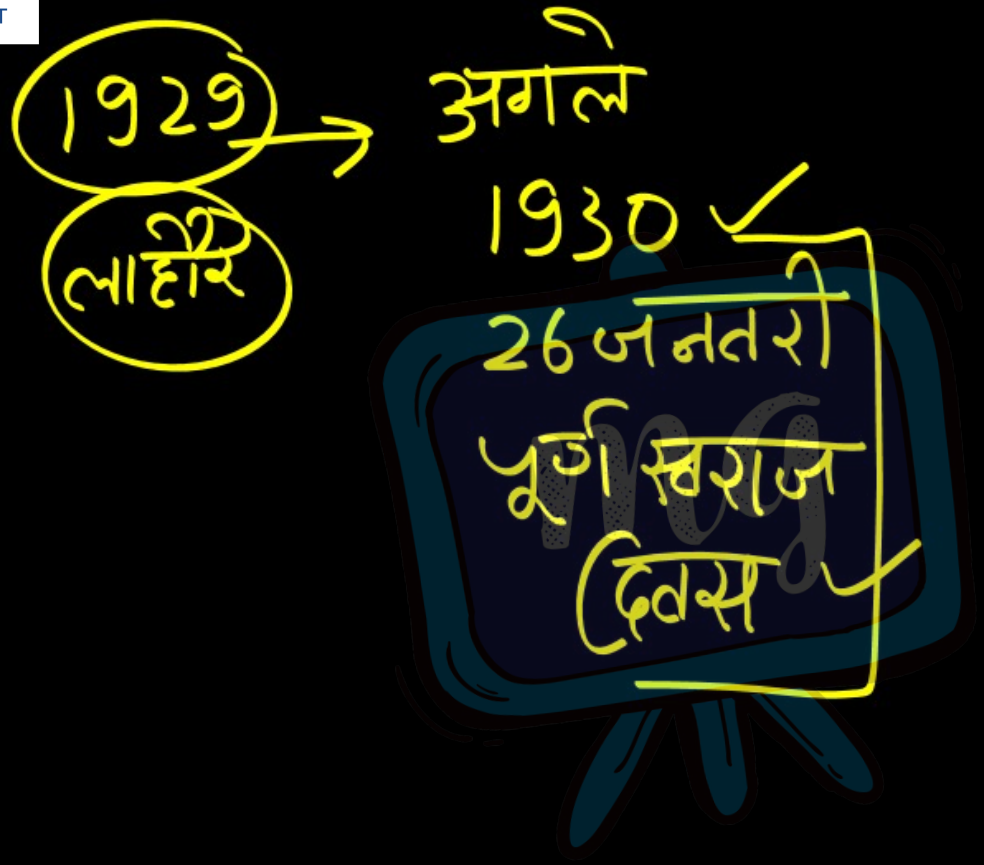

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1) साइमन कमिशन
2) पूर्ण स्वराज दिवस
3) लाहौर अधिवेशन

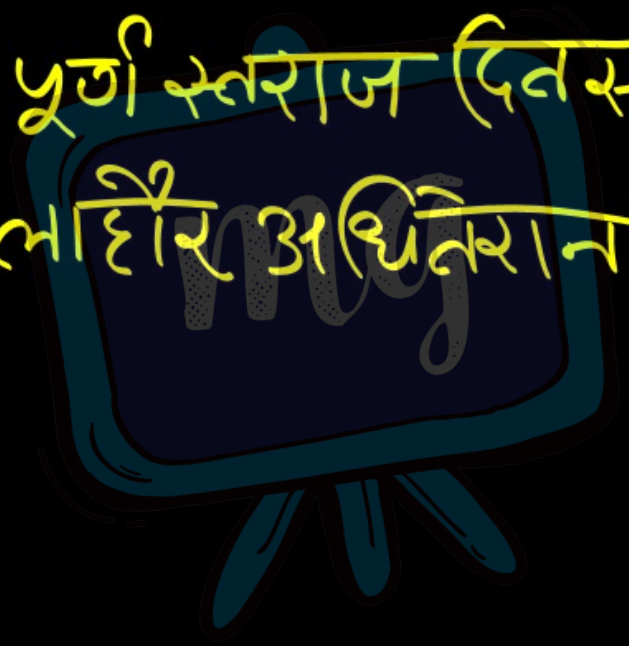

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

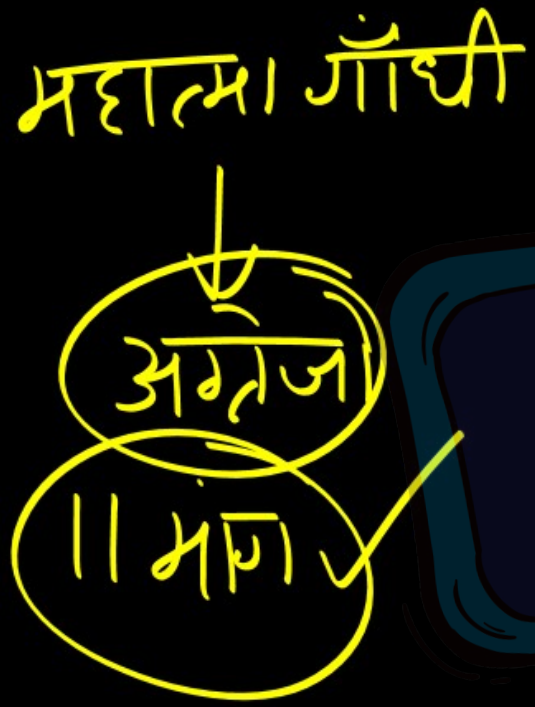

नमक यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन

नमक यात्रा :-

- देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गांधी को नमक एक शक्तिशाली प्रतीक दिखाई दिया।
- 31 जनवरी 1930 को उन्होंने वायसराय इरविन को एक खत लिखा। जिसमें उनकी 11 माँगों थीं।
- इनमें से कुछ सामान्य माँगें थीं जबकि कुछ माँगें उद्योगपतियों से लेकर किसानों तक विभिन्न तबक़ों से जुड़ी थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- गांधीजी इन माँगों के ज़रिए समाज के सभी वर्गों को अपने साथ जोड़ना चाहते थे ताकि सभी उनके अभियान में शामिल हो सकें।
- इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण माँग नमक कर को खत्म करने के बारे में थी।
- नमक का अमीर-गरीब, सभी इस्तेमाल करते थे। यह भोजन का एक अभिन्न हिस्सा था।
- इसीलिए नमक पर कर महात्मा गांधी ने ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी पहलू बताया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- महात्मा गांधी का यह पत्र एक अल्टीमेटम (चेतावनी) की तरह था। उन्होंने लिखा था कि अगर 11 मार्च तक उनकी माँगें नहीं मानी गईं तो कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ देगी।
- इरविन झुकने को तैयार नहीं थे।
- फलस्वरूप, महात्मा गांधी ने अपने 78 विश्वस्त वॉलंटियरों के साथ नमक यात्रा शुरू कर दी।

- यह यात्रा साबरमती में गांधीजी के आश्रम से 240 मील दूर दांडी नामक कस्बे में खत्म होनी थी जो कि समुद्र तटीय क्षेत्र था।
- गांधीजी की टोली ने 24 दिन तक हर रोज़ लगभग 10 मील का सफर तय किया।
- गांधीजी जहाँ भी रुकते हज़ारों लोग उन्हें सुनने आते।